

पद २६७

(रागः झिंझोटी - तालः पंजाबी त्रिताल)

दया करो दीनन पर स्वामी । सत्यनारायण अंतर्यामी ॥ध्रु॥ कदली
शर्करा गोधूम पय घृत । कबहुं न कीनो ये विधि से व्रत ॥१॥
सत्यकथा सुनी नहि काननसे । कबहुं न नाम लियो आनन से ॥२॥
माणिकदास पतित खल कामी । पावन करो गरुडध्वज
स्वामी ॥३॥